अमरकान्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक अध्ययन

अनिता कुमावत (Net J.R.F.)
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
जय नारायण विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

साहित्य समाज का दर्पण है, जो अपने समय, समाज और व्यक्ति की स्थितियों, परिस्थितियों एवं मनोवृत्तियों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। प्रत्येक युग का साहित्यकार अपने रचनात्मक कर्म के माध्यम से व्यक्ति एवं समाज के बीच चेतना जागृत करने का प्रयास करता है। प्रेमचंद के पश्चात हिन्दी कथा साहित्य में जिन साहित्यकारों ने समय, समाज और परिवेश की नब्ज को पकड़कर कथा साहित्य की रचना की उसमें कथाकार अमरकांत का विशिष्ट स्थान रहा है।

अपने लेखन के माध्यम से आम आदमी के संघर्ष को भाषा व अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले कथाकार अमरकान्त का जन्म 1 'जुलाई 1925 को उत्तरप्रदेश के बलिया जिले की 'रसड़ा' तहसील के भगमलपुर नाम ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम सीताराम वर्मा और माता का नाम अनन्ती देवी था। इनके पिता एक वकील थे, जो बलिया जिले की कचहरी में प्रैटिक्स करते थे एवं माता एक सुघड़ गृहिणी'। मध्यवर्गीय कायस्थ परिवार में जन्में कथाकार अमरकान्त के वचपन का नाम रखा गया 'श्रीराम'। समाजगत जातिय भेदभाव के कारण कुछ समय पश्चात् इनके नाम के पीछे 'लाल' शब्द लगा देने से इनका नाम श्रीराम से 'श्रीरामलाल' हो गया। बचपन में किसी सन्त द्वारा इनका नाम अमरनाथ रखा गया किन्तु यह नाम पूर्णत पसन्द न आने के कारण इन्होंने उसमें थोड़ा सा परिवर्तन कर अपना नाम 'अमरकान्त' रख लिया। साहित्यिक क्षेत्र में आगमन से पूर्व अमरकांत 'श्रीराम वर्मा' के नाम से जाने जाते थे। अपने नामकरण के सम्बंध में चर्चा करते हुए स्वयं अमरकान्त ने अपने एक साक्षात्कार में कहा है कि ''मैं तब श्रीराम वर्मा था, अमरकांत मेरा पेननेम है 1953 में बदला, मेरी पहली साहित्यिक कहानी 'इंटरव्यू' 1953 में 'कल्पना' पत्रिका में छपी तभी पेननेम अमरकान्त रख लिया।''1

अमरकांत पर अपने पिता के धार्मिक एवं सहिष्णु व्यक्तित्व के साथ–साथ आर्यसमाजी संस्कारों का गहरा प्रभाव पड़ा। अपने पिता की देखरेख में पले–बढ़े अमरकान्त अपने सात भाई–बहनों में सबसे बड़े थे। अमरकांत की प्रारम्भिक शिक्षा नगरा ग्राम के प्राथमिक विद्यालय में तथा हाईस्कूल तक की शिक्षा भगलमपुर (नगरा) तहसील स्कूल एवं गवमेन्ट हाईस्कूल में हुई थी। सन् 1946 में आगे के अध्ययन हेतु इन्होंने बलिया जिले के सतीशचंद्र कॉलेज में प्रवेश लिया जहाँ से इन्होंने इण्टमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त कर प्रयाग विश्वविद्यालय इलाहाबाद से बी.ए. किया। अध्ययनकाल के दौरान सन् 1942 में गांधी द्वारा देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए चलाये गये आन्दोलनों के प्रभावस्वरूप इनके मन में यह विश्वास गहरा बैठ गया था कि देश सेवा है सर्वोच्च सेवा है और हिन्दी सेवा पर्याय है देश सेवा का।

देश सेवा का 'जज्बा हद्य में सँजोये अमरकांत ने शिक्षार्जन के पश्चात् नौकरी न कर भाषा एवं साहित्य की सेवा के लिए पत्रकार बनने का निर्णय लिया। अपने चाचा साधुशरण वर्मा जो उस समय आगरा में एक स्वदेशी बीमा कम्पनी में कार्यरत थे उनके प्रयासों से इन्होंने आगरा में प्रकाशित होने वाले उस समय के प्रतिष्ठित समाचार पत्र 'सैनिक के सम्पादकीय विभाग में नौकरी प्राप्त करने में सफलता अर्जित की। यहां पर इनका परिचय प्रख्यात कवि एवं साहित्यकार विश्वनाथ भटेलेजी से हुआ जो आगे चलकर मित्रता में बदल गया। भटेले के सम्पर्क में रहने पर इनका आगरा में स्थापित प्रगतिशील लेखक संघ की बैठकों में आना–जाना प्रारम्भ हुआ। जहाँ पर इनका परिचय संघ के महामंत्री एवं हिन्दी के प्रख्यात आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा' सहित, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मार्कण्डेय, शेखर जोशी, आनंद रघुवंशी, डॉ. नामवर सिंह जैसे अनेक आलोचकों एवं साहित्यकारों से हुआ। गजल गायक के रूप में पहचाने जाने वाले अमरकांत ने इस संघ की बैठक में अपनी कहानी प्रथम कहानी 'इटरव्यू' सुनायी जिसे सभी के द्वारा मुक्त कठं से सराहा गया। यही से अमरकांत के जीवन की दिशा में एक नया मोड़ आने के साथ–साथ इनका हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में वास्तविक पदार्पण हुआ।

सन् 1956 में कहानी पत्रिका में प्रकाशित एवं पुरस्कृत 'डिप्टी कलक्टरी कहानी इन्हें कथा साहित्य के क्षेत्र में पहचान दिलाने में मील का पत्थर सिद्ध हुई। सन् 1950 से अपने लेखकीय कर्म का शुभारम्भ करने वाले कथाकार अमरकान्त की लेखनी से कुल एक सौ चालीस से भी अधिक कहानियां का लेखन किया जा चुका है। ये कहानियाँ समय–समय पर धर्मयुगं, 'उत्तरप्रदेश', 'वसुधां, 'मधुमती' कल्पना 'दिनमान' जैसी अनेक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के साथ–साथ एक दर्जन से भी अधिक कहानी संग्रहों में प्रकाशित हो चुकी है। इनके प्रमुख कहानी संग्रह है 'मौत का नगर', 'जिन्दगी और जोकं', 'सुख दुख का साथ' (2002) 'मित्र–मिलन तथा अन्य कहानियां' (1979), 'कुहासा' (1983) 'तूफान' (1989) 'जांच और बच्चे' (2005), 'एक धनी व्यक्ति का बयान' (1997) आदि। अमरकान्त की कहानियों का कथ्य इनके आस–पास के परिवेश से निर्मित है। इन्होंने अपने समकालीन कहानिकारों से हटकर मध्यवर्ग एवं निम्नमध्यवर्ग को केन्द्र में रखकर कहानियों की रचना की, जो अपने समय के समाज, उसके परिवेश का यथार्थ के ठोस धरातल पर पाठक को साक्षात्कार करवाती है। इस सम्बंध में स्वयं अमरकान्त ने अपने एक साक्षात्कार में अभिव्यक्ति दी है कि ''जब रचना में अपने युग के सामाजिक यथार्थ का द्वंद्वयुक्त संवेदनात्मक व्याप्क मानवीय अनुभूतियों से ओत–प्रोत कलात्मक चित्र उपस्थित होता है, तब उसमें युग की सच्चाईयों का अन्वेषण होता है और जब वह प्रगतिशील जीवन दृष्टि अथवा प्रगतिशील आस्था से सम्पन्न होती है तभी वह वस्तुगत स्थितियों में बदल जाने पर भी आगे वाले पाठकों को प्रभावित करती है।''[2]

साहित्य का प्रयोजन सामाजिक यथार्थ का चित्रण करना मानने वाले कहानीकार अमरकान्त द्वारा रचित 'डिप्टी कलक्टरी', 'जिन्दगी और जोक' एवं 'दोपहर का भोजन' अभावग्रस्त मध्यवर्गीय जीवन के उस दर्द का हमें अनुभव करवाती है जो हमारे आसपास नजर आता है। इनकी यें तीनों कहानियों को इनकी समस्त कहानियों में से शिखरस्थ उपलब्धि प्राप्त है, जो पाठक वर्ग को प्रेमचन्दयुगीन साहित्यकार चन्दधर शर्मा गुंलेरी' द्वारा रचित उस कथा त्रयी का स्मरण कराती है, जिसके आधार पर उन्होंने हिन्दी कथा साहित्य में धूम मचा दी थी इस

सम्बंध में 'प्रकाश मनु' के ये शब्द सार्थक प्रतीत होते है कि–'' अमरकांत की तीन कहानियों की तुलना अगर किसी से की जा सकती है तो वह वह चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की 'उसने कहा था', 'सुखमय जीवन', बुद्दू का काटां' वाली महान कथात्रयी ही है।''3

सन् 1956 में प्रकाशित 'जिन्दगी और जोकं' अमरकांत द्वारा रचित 'रजुआ' नामक निम्नमध्यवर्गीय चरित्र के अदम्य जीजिविषा की ही नहीं बल्कि नौकर कहे जाने वाले जीव के प्रति हमारी समाज व्यवस्था की प्रतिक्रियाओं को अभिव्यक्त करने वाली एक अति जीवन्त और मर्मस्पर्शी कहानी है। 'डिप्टी कलक्टरी' कहानी में बदलते हुए मानवमूल्यों एवं नैतिक मूल्यों के द्वंद्व के साथ–साथ लेखक ने मध्यवर्गीय व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षाओं व बेहतर ढंग से जिन्दगी जीने की जद्दोजहत को जिस संवेदना के साथ कहानी में दर्शाया है, कुछ वैसी ही पीड़ा और संवेदना का अति कारूणिक चित्रण दोपहर का भोजन' कहानी में सिद्धेश्वरी के चरित्र द्वारा किया है। इस कहानी में लेखक ने आर्थिक विषमता एवं बेरोजगारी की मार झेलते हुए स्वतत्रतापरवर्ती मध्यवर्गीय भारतीय परिवार की जिन त्रासद अभावपूर्ण स्थितियों का अंकन किया है, वह देखने योग्य है। इस सम्बंध में डॉ. नामवर अंत का कथन है कि–'' अमरकान्त ने अपनी कहानियाँ वहाँ से उठायी है और इस तरह हमारी आँखों से ही हमारी जिन्दगी के न जाने कितने पर्दे उठ गये है। इस क्षेत्र में अमरकांत की कहानियाँ किसी नये लेखक के लिए चुनौती है।''4

कहानीकार के रूप में विख्यात रहे अमरकान्त ने कहानियों के अतिरिक्त मध्यवर्ग एवं निम्नमध्यवर्गीय जीवन यथार्थ का अति संवेदनशील चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। इनकी लेखनी से एक दर्जन से भी अधिक उपन्यासों का सृजन किया जा चुका है। इनमें से कुछ प्रमुख है – 'सूख पत्ता' (1959), 'ग्रामसेविका' (1973), 'काले उजले दिन' (2003) 'बीच की दीवार' (1969), लहरे (2005), विदा की रात' (2006) 'सुखजीवी' (1982), 'इन्हीं हथियारों से' (2003)। अपने उपन्यासों में अमरकान्त अपनी कहानियों की अपेक्षा पूर्णतया भिन्न रोमांटिक भावदशाओं को लेकर उपस्थित हुए है यहीं कारण है कि इनके उपन्यास कहानी की तुलना में विशेष रूप से चर्चित नहीं रहे। सन् 1959 मे रचित 'सूखा पत्ता' उपन्यास में कृष्णा उर्मिला की प्रेम कथा है। कृष्ण अपने मामा के घर पर रहकर अंग्रेजी में रिसर्च कार्य करता है जो उर्मिला से प्रेम करता है उसके लिए जी–जान तक भी परवाह नहीं करता है। उर्मिला से बिछुड़ने पर उसकी मनोदशा हवा के झोंको से उड़ने वाले सूखे पत्ते की भाँति हो जाती है। वह अपने प्रेम को विवाह में परिणत कर सामाजिक मान्यता दिलवाने में तो सफल नहीं हो पाता किन्तु आगे चलकर यहीं प्रेम उसमें संघर्ष का चेतना को जन्म देता है और वह समाज को बदलने के लिए कृतसंकल्प होता है। 'ग्रामसेविका' उपन्यास में दमयन्ती नामक एक स्त्री के जीवन संघर्ष की कहानी है। 'काले–उजले दिन' उपन्यास में लेखक ने स्वतत्रंतापरवर्ती भारतीय समाज में आये बदलावों के साथ–साथ पाठक के सामने नारी स्वतत्रंता को लेकर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया है। 'बीच की दीवार' उपन्यास में अमरकांत जी निम्नमध्यवर्गीय मुंशी मन्नीलाल की बेटी 'दीप्ति' की कहानी को व्यक्त करते है। अत्यधिक लाड–प्यार एवं भौतिक सुखि–सुविधाओं में पली–बढ़ी दीप्ति अपने भाई के मित्रों संग अवसरवादी जिन्दगी के भंवर जाल में फँस जाती है आगे बढती है संघर्ष करती है और अन्त में विकास की वांछित मंजिल प्राप्त कर लेती है। 'कँटीली राहके फूल' उपन्यास में मधु, कामिनी एवं संकोची प्रवृत्ति के अनूप की त्रिकोणीय प्रेम कथा है। 'विदा की रात'

उपन्यास में लेखक ने विभाजन की त्रासदी का दर्द बया किया है, तो 'इन्हीं हथियारों सें उपन्यास में जिस पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा जा चुका है, इस उपन्यास के अन्तगर्त लेखक ने देश की स्वतत्रंता तक बलिया जिले के सामाजिक यथार्थ का चित्रण ईमानदारी के साथ करते हुए गाँधीवादी विचारधारा के अन्तर्गत आने वाले व्यवहारिक कार्यक्रमों के रचानात्मक सूत्रों को पिरोया है। यह इनका एक वृहद उपन्यास है जिसे समीक्षकों एवं विद्वानों ने प्रेमचंद के 'गोदान' की भाँति महाकाव्यात्मक गरिमा वाले उपन्यासों की श्रेणी में रखा है, जो इसकी लोकप्रियता का सहज परिणाम कहा जा सकता है।

नयी कहानी के अग्रदूत माने जाने वाले कथाकार अमरकांत ने कहानियों एवं उपन्यासों के अतिरिक्त लघु बाल साहित्य, प्रौढ़ साहित्य एवं दो संस्मरणों की भी रचना की है। इन्होंने 'सुग्गी चाची का गाँव', 'झगरूलाल का फैसला', 'एक स्त्री का सफर' नामक तीन छोटे–छोटे लघु प्रौढ़ उपन्यासों एवं 'नेऊर भाई', 'मंगरी', 'वानर सेना', 'सच्चा दोस्त' 'बाबू का फैसला', 'खूटाँ में दाल है' जैसे छः लघु बाल उपन्यासों का लेखन करने के अतिरिक्त 'दोस्ती' 'कुछ यादे कुछ बाते' नामक दो सस्मरणों की भी रचना की। इनका लघु बाल साहित्य बच्चों को सुसंस्कारित करने, नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने के साथ–साथ देश के लिए सुयोग्य भावी पिढ़ी के निर्माण में अपना योगदान देता है। अपने संस्मरणों के अन्तर्गत लेखक ने अपने छः' दशकों की लम्बी साहित्यिक जीवन यात्रा के दौरान हुए विविध अनुभवों को पाठकों के साथ बाँटा है।

हिन्दी के यशस्वी साहित्यकार अमरकान्त को सोवियत लैण्ड सम्मान साहित्य अकादमी सम्मान, ज्ञानपीठ सम्मान, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान संस्थान, महात्मागाँधी सम्मान, व्यास सम्मान, मैथिलीशरणगुप्त सम्मान, जनसंस्कृति सम्मान, मध्यप्रदेश सरकार का अमरकीर्ति सम्मान, यशपाल सम्मान सहित अनेक उत्कृष्ट पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। वे हिन्दी के एक ऐसे विरले साहित्यकारों में से एक है जिन्हें सम्मानित कर स्वयं पुरस्कृत करने वाली संस्था एवं सम्मानों की साख बढ़ी है। इन्होंने कभी अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया और न कभी किसी लालच में पड़कर परिस्थितियों के आगे हार मानी। अपने सम्पूर्ण कथा साहित्य में जीवन के भोगे हुए यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाले हिन्दी के ऐसे कालजयी साहित्यकार का निधन 17 फरवरी सन् 2014 में इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश में हुआ जो हिन्दी साहित्य जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। इनके देहावसान पर शोक व्यक्त करते हुए हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार असगर वजाहत ने कहा है कि–'' अमरकांत अपनी पीढ़ी के एक ऐसे कहानीकार थे जिनसे उस समय के युवा कहानीकारों ने बहुत कुछ सीखा। वो कहानीकारों में इस रूप में विशेष माने जाएंगे कि एक पूरी पीढ़ी को उन्होंने सिखाया पढ़ाया।''5

इस प्रकार समग्रतः कहा जा सकता है कि परतंत्र भारत में जन्में और स्वतंत्र भारत में अपने लेखन की शुरूआत करने वाले कथाकार अमरकांत हिन्दी साहित्य के एक मूर्धन्य साहित्यकार थे, जिन्होंने अपने जीवन के सुख–दुख के अनुभवों को संजोते हुए और विभिन्न स्थितियों परिस्थतियों को देखते हुए उपन्यास, कहानी, बाल एवं प्रौढ़ साहित्य व संस्मरण जैसी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। उनकी लेखनी पाठकों के मन–मस्तिष्क में संवेदनात्मक–भावात्मक तथा रूपात्मक वातावरण प्रस्तुत करने में सक्षम है। आज अमरकान्त का शरीर भले ही पंचतत्व में विलीन हो गया हो परन्तु वे अपनी रचना धर्मिता के माध्यम से सदैव पाठकों के बीच जिन्दा रहेगे

और एक उच्च कोटि के साहित्यकार के साथ–साथ अच्छे इन्सान के रूप में उन्हें सदैव स्मरण किया जाता रहेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

1. 'कथादेश' पत्रिका अंक मार्च 2006 पृष्ठ 16
2. अमरकांत एक मूल्यांकन : रविन्द्र कालिया, पृष्ठ 113
3. 'साहित्य अमृत' पत्रिका : लेख 'प्रकाश मनु' पृष्ठ 14, अप्रैल 2014
4. हिन्दी कहानी का विकास : मधुरेश, पृष्ठ संख्या 159
5. New India times : B.B.C. Hindi, फरवरी 2014
6. अमरकान्त का मौलिक कथासाहित्य